International Journal of Jyotish Research: 2018; 3(1): 24-25

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.11
Jyotish 2018; 3(1): 24-25
© 2018 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 15-11-2017
Accepted: 16-12-2017

डॉ. शिप्रा पारीक
व्याख्याता–संस्कृत
एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. शिप्रा पारीक
व्याख्याता–संस्कृत
एस.एस.जैन सुबोध पी.जी. महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

वेदों में मनीषियों के प्रार्थनापरक मंत्र

डॉ. शिप्रा पारीक

प्रस्तावना

मेधावी मनीषी है। ''मनीषा अस्य अस्तीति'' अर्थात् जो बुद्धिमान है वह मनीषी है। सायणाचार्य ने अपने भाष्य में मेधावी को मनीषी कहा है।

''मनीषिणो मेधाविन'' (सायणाचार्य भाष्य 332)

मनीषी ज्ञान सम्पन्न व्यक्ति होता है। उसका ज्ञान अथाह सागर के सदृश्य होता है। मनु के अनुसार मनीषी 'ईश्वर' सदृश्य होता है।

यन्मूर्त्यवयवाः सूक्ष्मास्तस्ये मान्याश्रयन्ति षट्।
तस्माच्छशीमित्याहुस्तस्य मूर्त्ति मनीषिण।। मनुस्मृति 1/17

गुरूनानक देव सब धर्मो में पावन जीवन की सम्भावना को स्वीकार करते है। गुरूनानक देव ने नाम (प्रार्थना भक्ति) की महत्ता को स्वीकार किया है। उनके अनुसार निर्विकार भाव से प्रभु का स्मरण करने से हृदय पवित्र होता है। जब कोई खाद्य पदार्थ खाते है तो मलिन हुये हाथों को जल द्वारा प्रक्षालित कर स्वच्छ कर लिया जाता है और मलिन वस्त्रों की मलिनता को भी साबुन लगाकर स्वच्छ कर लिया जाता है उसी प्रकार जब हमारी मति पाप कर्मों से भ्रष्ट हो जाती है तब नाम (भक्ति या प्रार्थना) के प्यार से उसे धोया जा सकता है।

नाम (भक्ति) सर्वव्यापक है। सृष्टि में सभी स्थान नाम से परिपूर्ण है। नाम की प्राप्ति तभी संभव है जब हमारे अहम का अन्त हो जाये।

रामकृष्ण परमहंस जी के अनुसार प्रार्थना में व्याकुलता होनी चाहिए। भगवान की भक्ति में मन में इस प्रकार का भाव होना चाहिए।

''मैं यंत्र हूँ, तुम यंत्री हो, मैं घर हूँ, तुम घर वाले हो, मैं रथ हूँ तुम रथी हो, जैसार कराते हो वैसा ही करता हूँ, जैसा चलाते हो वैसा ही चलता हूँ।''

(श्री रामकृष्ण उपदेश, पृ. 93)

श्री रामकृष्ण परमहंस जी के अनुसार भक्ति में प्रेम का स्थान सर्वाधिक ऊँचा है। भक्ति में प्रेम से हरि नाम का उच्चारण करते – करते सारे जगत् की विस्मृति तो हो ही जाती है और स्व शरीर का भी विस्मरण हो जाता है।

(श्री रामकृष्ण उपदेश, पृ. 93)

स्वामी विवेकानन्द प्रार्थना को भक्ति और साधना का ही रूप मानते है। स्वामी जी का कथन है कि ईश्वर और उनके प्रति भक्ति दोनों के बीच अन्य वस्तु नहीं होनी चाहिए जो कि तुम्हे उनकी ओर अग्रसर होने से रोके। भगवान की भक्ति करो। उनके प्रति अनुरागी बनो, उन पर प्रेम करो।

स्वामी विवेकानन्द, देववाणी पृ.51

स्वामी विवेकानन्द जी का स्पष्ट मत है कि ईश्वर से प्रेम करना होगा और साधना करनी होगी। सतत ईश्वर का चिन्तन करना चाहिए और दैनिक जीवन के कार्य भी ईश्वर भावापन्न होकर ही करने चाहिए।

स्वामी का मानना है कि जब अहं नहीं होता तभी हम सर्वोतम कार्य कर सकते है। दूसरों को अपनी ओर आकृष्ट कर सकते है। ईश्वर ही एकमात्र यथार्थ कर्ता है यह सभी प्रतिभाशाली व्यक्ति जानते है।

स्वामी दयानन्न जी ने प्रार्थना को मानव जीवन में सर्वोपरि माना है। उनका मन्तव्य है कि मनुष्य जैसी प्रार्थना करता है उसे वैसा वर्तमान में भी करना चाहिये।

प्रार्थना उत्कृष्ट करनी चाहिये, विकृष्ट प्रार्थना कदापि नहीं करनी चाहिए।

स्वामी दयानन्द जी ने यजुर्वेद के प्रार्थना परक मंत्र के अर्थ को स्पष्ट करते हुये कहा है–

''कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः''

ईश्वर की आज्ञा है कि मनुष्य सौ वर्ष पर्यन्त जीवेम और जब तक जीवें तब तक श्रेष्ठ कर्म करता रहे। और कभी भी आलस्य का अवलम्बन ग्रहण न करे। सृष्टि में सभी प्राणी–अप्राणी स्व–स्व कर्मो को यत्न पूर्वक करते रहते है। जैसे पिपीलिका सदा श्रम करती रहती है, पृथ्वी सदैव भ्रमण करती रहती है। वृक्ष सदैव घटते–बढ़ते रहते है। यही दृष्टांत मनुष्यों को भी ग्रहण योग्य है।

''प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहायता मिलती है।''
सत्यार्थ प्रकाश सप्तम मुल्लासपृ. 218

इस प्रकार विभिन्न मनीषियों के प्रार्थना विषयक विचारधारा पृथक–पृथक है परन्तु निष्कर्ष में एक ही अर्थ निकलता है कि हमें अपने जीवन में आध्यात्मिक शान्ति के लिए परमेश्वर की आराधना आवश्यक है।

चाहे अमीर हो या गरीब, राजा हो या रंक, छोटा हो या बड़ा। सभी को अन्ततः आध्यात्मिक शांति, प्रार्थना और ईश्वर की असीम शक्ति का अहसास व भाव रखने पर मिलती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रार्थना की अत्यन्त आवश्यकता है जैसा विहंगम वातावरण चहुँ ओर फैल रहा है, तकनीकी चकाचौंध फैल रही है समय का अभाव सभी के मुख से सुना जाता है और सभी मानसिक दुःख से त्रस्त दृष्टिगत होते है ऐसे में ईश्वर प्रार्थना का महत्व सर्वोपरि है।